(To be filled by the Candidate)

Class M.A. II

Date of Exam 19 04 19

Year M.A. II

Paper Code 2391

Paper Adhunik Hindi Kavya

PART - A

BUNDELKHAND UNIVERSITY, JHANSI, U.P.

COMMON ANSWER BOOK (40 Pages)

PART - B

(TO BE FILLED BY THE EXAMINER)

SECTION A Q. No.	MARKS	SECTION B Q. No.	MARKS	SECTION C Q. No.	MARKS
1		1		1	
2		2		2	
3		3		3	
4		4		4	
5		5		5	
6		6		6	
7		7		7	
8		8		8	
9		9		9	
10		10		10	
11		11		11	
12		12		12	
13		13		13	
14		14		14	
15		15		15	
Total in Words					

Paper Code 2391

Examiner Name

Signature of Examiner

Evaluation Co-Ordinator Remark

6572271

खण्ड 'अ' प्रश्न-2

उत्तर-2 **संकेत-** और देख वह ---------- सुशोभित हो सौरभ संयुक्त।

सन्दर्भ

प्रस्तुत काव्य पंक्तियां 'कामायनी' के 'श्रद्धा सर्ग' से अवतरित हैं। इसके रचयिता (प्रसाद) छायावाद प्रवर्तक श्री जयशंकर प्रसाद जी हैं।

प्रसंग

प्रस्तुत पद्यांश मनु द्वारा श्रद्धा के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है। इसी कवि प्रसाद मनोहारी चित्रण प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है—

व्याख्या

मनु जब अकेले निर्जन वन में वास कर रहे होते हैं तब अचानक कोई सुन्दरी आकर उनके सामने उपस्थित होती है। कवि उसी का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वह इतना सुन्दर दृश्य था ऐसा लग रहा है कि जैसे आंखों को सुकून मिल रहा हो। वह दृश्य ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो फूलों से लिपटी हुई लता हो। मनु को श्रद्धा ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे कि चाँदनी की ज्योत्स्ना से लिपटा हुआ बादल हो। श्रद्धा उनको हृदय से उदार और उसकी सुन्दर और सुडौल दिखती थी। ऐसा लग रहा था जैसे मधुवन में खेलता हुआ छोटा साल का वृक्ष हो, वसन्त ऋतु में सुगन्ध से परिपूर्ण हो। इसका कवि एक उपमा एक माध्यम से श्रद्धा के सौन्दर्य का वर्णन करता है।

काव्य सौन्दर्य

(1) इसमें कवि ने श्रद्धा के अद्वितीय सौन्दर्य का चित्रण किया है।
(2) कुसुम — घनश्याम में उपमा अलंकार।
(3) मधुपवन — ज्यों शिशु साल में उपमा अलंकार।
(4) श्रृंगार रस।
(5) भाषा — तत्सम युक्त खड़ी बोली।

2

प्रश्न-3

उत्तर **संकेत** आये सब शिविर — — — — आश्रय स्थल।

सन्दर्भ प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'राम की शक्ति पूजा' से लिया गया है।

प्रसंग जब एक दिन युद्ध समाप्त हो जाता है, उसमें रावण विजयी और राम की सेना को हार का सामना कर जो अपने शिविर की ओर लौट रहे हैं वहाँ पर एक सानु नामक पर्वत वे सब विश्राम करते हैं, उसी का वर्णन किया गया है —

व्याख्या कवि निराला जी कहते हैं कि सानु नामक पर्वत के पास शिविर में सब लोग आ गये। उनमें सुग्रीव, विभीषण, जामवंत, आदि वानर दल के सेनापति विशेष थे, वे सब शिविर में लौट आये। अंगद, हनुमान, नल, नील, ऋक्ष, प्रातः के रण का समाधान करने के लिए मसविरा के लिए सब एकत्रित हुए। फिर इसके बाद सब वानर दल अपने-2 विश्राम स्थल को चले गये। इस प्रकार कवि इसी का वर्णन करते हैं।

काव्य सौन्दर्य — (1) नल, नील में अनुप्रास अलंकार।
(2) भाषा — संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली।

3

P.T.O

प्रश्न-4

http://www.upadda.com

उत्तर-4 संकेत देख वसुधा ——— भेजता मौन।

सन्दर्भ प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पंत द्वारा रचित 'मौन निमंत्रण' से लिया गया है।

प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियों कवि ने वसन्त ऋतु के मौसम से संदेश ग्रहण करते हैं। उनको ऐसा प्रतीत होता है मानो वसन्त उनका इशारा कर रही है, वह कुछ संकेत दे रही है।

व्याख्या कवि कहता है, जब वसन्त ऋतु पृथ्वी पूर्ण रूप से फूलों से लद जाती है अर्थात पूर्ण यौवन में होती है, वह यौवन के भार से लद जाती है। हर जगह भौंरों की गुंजनाहट होती है। तब जैसे किसी पत्नी रहित वियोगी के मन में जो विछड़न मन में हलचल में होती है, फूल जब उसासे भरते हुए खिल उठते हैं उस समय कवि कहता है कि पता नहीं उस सुगन्ध के बहाने मुझे कौन संदेश भेजता है। इन पंक्तियों कवि ने रहस्यात्मकता का वर्णन करता है वह समझ नहीं पाता कोई तो है जो कि ऐसी अनुभूति कराता है।

http://www.upadda.com

काव्य सौन्दर्य

① विधुर के उर-से ——— उपमा अलंकार।
② 'न जाने ——— कौन' प्रश्नालंकार।
③ रहस्यात्मकता।
④ भाषा- खड़ी बोली।
⑤ गूंज उठता ——— मधुमास में ध्वन्यात्मकता।

3

P.T.O

प्रश्न - 5

उत्तर - 5 **संकेत** एक दिन सहसा —— —— —— फटी मिट्टी से।

सन्दर्भ प्रस्तुत पद्यांश सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित 'हिरोशिमा' नामक कृति से अवतरित है।

प्रसंग जापान के हिरोशिमा नामक शहर बम गिरने के कारण जो क्षति ग्रस्त हुआ उसका वर्णन कवि ने किया है—

व्याख्या कवि कहते हैं कि एक दिन सूरज निकला, लेकिन जहाँ पर पृथ्वी और आसमान मिलते हैं वहाँ से नहीं। वह सूरज शहर के बीच अर्थात चौक से निकला अर्थात बम गिरा था तो उससे जो गरमी, प्रचण्ड अग्नि की लपटें निकली थी वह अंतरिक्ष से नहीं बल्कि पृथ्वी से ही निकली थी। यह मानव-निर्मित सूरज था जिससे भयंकर जन-धन की हानि हुई थी।

काव्य सौन्दर्य - ① 9 अगस्त 1945 को जापान के हिरोशिमा शहर बम गिरा उसी का वर्णन कवि ने किया।

② भाषा — खड़ीबोली है।

प्रश्न - 8

उत्तर - **प्रसाद के काव्य में साहित्य दर्शन**

छायावाद के प्रवर्तक कवि जयशंकर प्रसाद जी के साहित्य में दार्शनिकता कूट-कूट भरी हुई है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से हमें जो दर्शन का ज्ञान दिया वह शायद ही किसी के साहित्य में देखने के लिए मिले। उन्होंने अपने काव्य में इसका यथोचित प्रयोग किया है। कामायनी उनकी यश-कीर्ति अद्वितीय ग्रन्थ है। जिसमें जीवन के सारे तत्वों की जानकारी मिल जाती है। उन्होंने अपने ग्रन्थ में इसका वर्णन इस प्रकार किया है—

'नीचे जल था, ऊपर हिम था
एक तरल था एक सघन।
एक तत्व की ही प्रधानता,
कहो उसे जड़ या चेतन ॥'

वह सम्पूर्ण संसार को एक पानी का ही प्रतिरूप मानते हैं। उनका मानना है कि जल ही जल इस संसार में वह चाहे तरल रूप में हो अथवा ठोस, इस सृष्टि का निर्माण ही जल को लेकर हुआ। प्रसाद जी एक उच्च कोटि के दार्शनिक कवि थे।

P.T.O.

प्रश्न - 9

उत्तर **निराला के मुक्त छन्द अवधारणा**

मुक्त छन्द के प्रवर्तक कवि निराला जी के काव्य में अनेकानेक नवीन छन्द देखने के लिए मिल जाते हैं। 'राम की शक्तिपूजा' उनकी कृति मुक्त की दृष्टि अप्रतिम कृति है। इसका मूल्यांकन करते हुए कवि ने लिखा है कि वह अपने काव्य नवीन छन्दों का प्रयोग करते हैं जैसे—

'दिवसावसान का समय था
मेघमय आसमान से उतर रही
संध्या सुन्दरी परी-सी
धीरे-धीरे।'

उन्होंने अपने काव्य में किसी ऐसी बाध्यता को स्वीकार करते हैं उन्हें जो आता है उसी छन्द का प्रयोग करते हैं:—

'विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग भरी।' इत्यादि छन्दों का वर्णन उनके काव्य में मिलता है। इसी लिए तो उन्हें मुक्त छन्द का प्रवर्तक माना जाता है।

प्रश्न - 10

http://www.upadda.com

उत्तर **महाकवि निराला**

यह सत्य ही है कि महाकवि निराला का जीवन संघर्षपूर्ण जीवन रहा है। जिन्दगी भर संघर्ष करते हुए उनका जीवन बीता वे अपनी जिन्दगी में विष पी-पीकर जीते रहे। उन्होंने स्वयं लिखा है—

'दुःख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ जो आज नहीं कही।' (सरोज-स्मृति)

महाकवि निराला के जीवन सदैव दुःख पूर्ण बीता है। उन्होंने अपनी बेटी सरोज की मृत्यु के बाद उनकी स्मृति एक उन्हीं नाम पर लम्बा शोकगीत लिखा है जो हिन्दी साहित्य की अमूल्य कृतियों में से एक है। निराला की दूसरी संघर्षपूर्ण जीवन कृति 'राम की शक्ति पूजा' है जिसमें कवि अनुभव जन्य सत्य घटना का वर्णन किया गया है। उन्होंने स्वयं लिखा है—

'हाय! दुःख पाता ही,
आया विरोध।
सदा जिसके लिए,
करता रहा शोध॥'

http://www.upadda.com

इस प्रकार उन्होंने विष पीकर इस संसार भगवान शंकर की तरह अमृत दिया है।

P.T.O

प्रश्न - 11

उत्तर-11 पंत की कविता मौन निमंत्रण की मूल संवेदना — पंत जी कविता 'मौन निमंत्रण' की मूल संवेदना उसकी रहस्यात्मकता है। कोई अज्ञात सत्ता का होना है, जो इस संसार में है तो लेकिन दिखाई नहीं देती है। उसका आभास ही केवल होता है, इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पंत जी की वह अज्ञात किसी शिशु की अज्ञानता की तरह हमेशा उसे सजगता प्रदान करती है। उसे सचेत करती है अतः वह कौन है। वह हमेशा अनुभव करता है लेकिन उसका पता नहीं पाता है इसी का वर्णन इस प्रकार देखा जा सकता है —

स्तब्ध ज्योत्स्ना में जब संसार,
चकित सोता शिशु-सा नादान,?
विश्व के पलकों में सुकुमार,
विचरते हैं जब स्वप्न अजान।।
न जाने नक्षत्रों से कौन।
निमंत्रण मुझको देता मौन।

इस प्रकार कवि जिज्ञासा हमेशा यही प्रश्न करती है कि वह आखिर कार कौन है?

प्रश्न - 14

उत्तर उर्मिला का चरित्र-चित्रण — 'साकेत' महाकाव्य की नायिका उर्मिला है। वह लक्ष्मण की पत्नी एवं इस काव्य विरहिणी नायिका है, उसकी चारित्रिक

(1) विशेषतायें इस प्रकार हैं —

अद्वितीय सुन्दरी — उर्मिला अद्वितीय सुन्दरी है। वह लक्ष्मण के वियोग स्वयं को भूल जाती है। उसकी सुन्दरता का चित्रण कवि ने इस प्रकार किया है —

'स्वर्ग का फूल धरती पर है खिला,
नाम इसका उचित ही उर्मिला।

(2) **परिहास-प्रियता** — उर्मिला परिहास-प्रिय नारी है। वह लक्ष्मण से परिहास करते हुए कहती है कि —

और कुछ काम किया है कभी,
या मुझे ही सिखाये हैं अभी।

(3) **त्याग एवं बलिदान की देवी** — उर्मिला त्याग एवं बलिदान की साकार मूर्ति है। वह चौदह वर्ष लक्ष्मण के वियोग में जलती रहती है। सीता के कथन में —

सास-ससुर की स्नेहलता, बहिन उर्मिला महाव्रता।
निश्चय सिद्ध करोगी यह, जो भी मैं कर सकी कहाँ।।

P.T.O.

(4) **विरहिणी बाला**

उर्मिला विरहिणी बाला की तरह हमेशा अपने प्रियतम की याद में तड़पती रहती है। एक क्षण के लिए जब चित्रकूट में लक्ष्मण उन्हें मिलते हैं तो वह कहती है—

मेरे उपवन के हरिण,
आज वनचारी।
मैं बांध न लूंगी तुम्हें,
तजो भय भारी।।

प्रश्न-7

उत्तर- अंधेरे में

कवि मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' एक लम्बी एवं जीवन मूल्यों की खोजती कविता है। डा० रामविलास शर्मा ने इसे 'आत्मिता की खोज' की कविता कहा है।

'मैं अंधा हूँ
खुदा के बंदों का बंदा हूँ
मेरे इस सांवले चेहरे पर कीचड़ के धब्बे हैं
दाग हैं,
मेरे इस फैली हुई हथेली में जलती हुई आग है
अग्नि विवेक की।'

3

P.T.O.

खण्ड 'ब' दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर-3 निराला के काव्य में छायावाद, रहस्यवाद और प्रगतिवाद—

'निराला के काव्य में छायावाद, रहस्यवाद और प्रगतिवाद तीनों की त्रिवेणी प्रवाहित है' क्योंकि उनके द्वारा कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं छूटा है जो उनकी दृष्टि में न हो। उन्होंने अपनी रचनाओं में हर तरफ नजर दौड़ायी है। उनके काव्य में छायावाद का मूल्यांकन इस प्रकार किया जा सकता है—

छायावाद निराला के काव्य में छायावाद इस प्रकार अवलोकन किया जा सकता है—

(1) सौन्दर्य-योजना

यद्यपि महाकवि निराला सौन्दर्यवादी कवि नहीं थे फिर भी उनके काव्य इसका प्रचुरता से प्रयोग किया गया है—

जैसे— अलसता की लता
किन्तु कोमलता की कली
वह जुही की कली,
सोती थी सोहाग भरी
नायक ने चूमे कपोल
डोल उठी वल्लरी जैसे हिंडोल।

http://www.upadda.com

(2) प्रकृति-चित्रण

महाकवि निराला जी प्रकृति का भी सूक्ष्म चित्रण अपने काव्य में प्रस्तुत किया उन्होंने इसका प्रयोग 'सन्ध्यासुन्दरी' नामक कविता में किया है—

'दिवसावसान का समय था
मेघमय आसमान से
उतर रही, परी-सी वह
संध्या-सुन्दरी,
धीरे-धीरे।'

(4) काल्पनिकता निराला के काव्य में कल्पना शक्ति तो थी साथ में सत्य का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत होता है। 'Not one Power alone make a poet, imagination the divine.'
Black (ब्लैक)

(5) प्रेम का निरूपण

निराला के काव्य में प्रेम का चित्रण भी खूब किया गया है। उनकी 'राम की शक्ति पूजा' में राम Flash Back द्वारा सीता का प्रथम मिलन इस प्रकार याद कर रहे हैं—

देखते हुए निष्पलक याद आया उपवन,
विदेह का प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन,
नयनों का नयनों से गोपन प्रिय सम्भाषण,
पलकों का पलकों पर प्रथमोत्थान पतन।।

P.T.O.

रहस्यवाद

कवि निराला के काव्य रहस्य का भी चित्रण किया गया यद्यपि हर कवि कि यह लालसा होती है कि आखिर कार वह कौन-सी ऐसी सत्ता है जिसके माध्यम से यह संसार चल रहा है। कवि निराला भी उस वृत्ति अछूते नहीं रहे। उनकी भी जिज्ञासा प्रबल हो उठती है और वो अनुभव करते हैं कि आखिर वह कौन ऐसा है। रहस्यवाद का यही मतलब होता है।

प्रगतिवाद

प्रगतिवाद का चित्रण उन्होंने निम्न बिन्दुओं पर देखा जा सकता

(1) शोषितों के प्रति सहानुभूति

कवि निराला शोषितों की प्रति सहानुभूति रखते थे। वह पूंजीवादी से घृणा करते थे। उनका मानना है कि वह मजदूर जो दिन रात मेहनत करता है उसे खाने को नहीं मिलता—

वह आता
दो टूक कलेजे के करता (1)
पथ पर, पछताता आता (2)
चल रहा लकुटिया टेक (3)
पेट-पीठ मिलकर हो गये हैं एक (3)

(2) पूंजीवादियों के प्रति आक्रोश

कवि निराला पूंजीवादियों बहुत चिढ़ते थे। वह उनको अबे, तबे सब-कुछ डाटते थे। उन्हें कभी किसी नहीं मानते थे। वे बड़े मस्त मौला इंसान थे।

अबे सुन बे गुलाब, गर पाई है खुशबू रंगो आब
खून चूसा है खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा बन के पटेलिश्ट।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कवि निराला के काव्य तीनों का संगम देखने को मिलता है। वह अपनी कविताओं यथार्थ ही व्यक्त करते हैं।

वह तोड़ती पत्थर
देखा मैंने
उसको इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।

इस प्रकार कवि का जो चित्रण की सूक्ष्म दृष्टि है उसका बखूबी निर्वाह उन्होंने किया है। उनका साहित्य इन प्रकारों परिपूर्ण है। उनके काव्य में सत्य को उजागर किया गया है।

P.T.O

प्रश्न - 5

उत्तर - मुक्तिबोध के काव्य की विशेषतायें

"शान्ति, सुखकारी अन्वेषण के विविध आयाम को खोजते मुक्तिबोध इस स्थिति में पहुंचे कि उन्हें कहीं शान्ति नहीं मिली।" तार सप्तक के अनुसार

(1) विरोध एवं विद्रोह

मुक्ति के विरोध और विद्रोह देखने को मिलता है। उन्होंने इसका वर्णन इस प्रकार किया किया —

'देखता हूँ हर गली में
और हर सड़क पर
झांक - 2 कर देखता हूँ हर एक चेहरा
हर एक गतिविधि
प्रत्येक चरित्र।'

(अंधेरे में)

(2) व्यंग्य और विद्रूप

मुक्तिबोध एक बुद्धजीवी कवि थे। उनके काव्य व्यंग्य वो चुटीले घाव जो शायद ही किसी के समझ में आये। उन्होंने इसका चित्रण इस प्रकार किया है —

http://www.upadda.com

पर तुम भी खूब हो
देखो ध्यान से
प्रतिपल तुम्हें प्यार करती हुई
तार टपकाती हुई आत्मा की कुतिया
सफलता की पहाड़ी ढाल पर
हाँफती हुई चढ़ती है
हर कोई राह में जिसे छेड़ता है हंसता है।

(3) वेदना एवं संत्रास

मुक्तिबोध यद्यपि जीवन वेदना और दुःख ही झेलते रहे। उनके काव्य यही मुखर कर आया है —

समस्या एक
मेरे सभ्य शहरों और ग्रामों
सभी मानव,
सुखी, स्वच्छ एवं शोषण मुक्त
कब होंगे।'

10

http://www.upadda.com

P.T.O

(4) जीवन मूल्यों की खोज मुक्तिबोध के काव्य में जीवन के विभिन्न पक्षों का वर्णन एवं चित्रण मिलता है— विवादों में हिस्सा लेता हुआ मैं
सुनता हूँ ध्यान से
अपने ही शब्दों के नाद,
प्रवाह और पाता हूँ अकस्मात
स्वयं के स्वर में
औरांग उटांग की बौरखाती हुई प्रतिध्वनियाँ।

(5) अस्मिता की खोज डा० रामविलास शर्मा के अनुसार 'अंधेरे में' मुक्तिबोध की कविता अस्मिता की खोज है।

खोजता हूँ पठार, पहाड़ समुन्दर
जहाँ मिल सके मुझे
मेरी खोयी हुई
परम अभिव्यक्ति अनिवार,
आत्मसंभवा।

(6) आत्मालोचन कवि मुक्तिबोध के काव्य में आत्म आलोचन ही दिखाई देता है। उन्होंने जगह इसका वर्णन प्रस्तुत किया

है जो इस प्रकार है—
"मैं मैली आँखों की ज्योति गुप्त हूँ
मैं मैले अतल के तल में
घन सुसुप्त आत्मा प्रातल में
मैं अजस्त्र पृथ्वी के मन-सा हूँ
मैं नमो बिहारी शरदिन्दु हूँ।"

(7) जीवन का यथार्थ बोध मुक्तिबोध जीवन के यथार्थ चित्रण करने में सिद्ध हस्त थे। उनके अनुसार—

खूब रंगदारी है
स्वर्ग के पुल पर
चुंगी के नाकेदार
भ्रष्टाचारी ~~मार~~ मजिस्ट्रेट, रिश्वत खोर थानेदार।"

अन्त में कवि डा० रामविलास शर्मा के शब्दों में—
"मुक्तिबोध हिन्दी साहित्य में सबसे आदर प्राप्त कवि हैं। उनकी लेखनी स्वच्छन्द एवं निरंकुश रही है। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से जो कुछ लिखा है वह हिन्दी साहित्य के लिए वरदान है।"

डा० रामविलास शर्मा

P.T.O.

प्रश्न- 4

उत्तर- पंत के काव्य में सौन्दर्य

प्रकृति कुशल चितेरे कवि पंत के काव्य सौन्दर्य चित्रण कई रूपों देखा जा सकता है—

① **नारी का अतीन्द्रिय सौन्दर्य** कवि पंत नारी के सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार करते हैं—

'खुले सौरभ के मधु कच जाल
सुधता होगा अनिल समोद
सीखते होगे उड खग बाल
तुम्हीं से कलरव केलि- विनोद।'

② **प्रेम एवं सौन्दर्य योजना** कवि पंत प्रेम का सौन्दर्य वर्णन में भी सिद्ध हस्त है—

'तुम्हारे छूने में था प्राण,
संग में पावन गंगा स्नान।
तुम्हारी वाणी में कल्याणि,
त्रिवेणी की लहरियों में-सा गान॥

③ **प्रकृति- चित्रण में सौन्दर्य** कवि प्रकृति का चित्रण इस प्रकार किया है

'शान्त, स्निग्ध, ज्योत्स्ना उज्ज्वल।
अचलक, अनंत, नीरव, भूतल!
सैकत शैय्या पर दुग्ध धवल,
तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल!
लेटी है श्रान्त, क्लान्त निश्चल।'

(4) **जीवन के विभिन्न पक्षों के वर्णन में सौन्दर्य**

'आज मुकुट बंधा था माथ
कल ही हुए हल्दी के पीले हाथ
खुले भी न थे लाज के बोल
खिले न थे चुम्बन शून्य कपोल
हाय यही कह गया संसार,
बना सिन्दूर अंगार।

12

⑤ **काल्पनिकता** कवि कल्पना बड़ी सुकुमार एवं कोमल है। कवि Black के शब्दों में— "One Power Alone, make a Poet, imagination the divine."

P.T.O

http://www.upadda.com

⑥ स्वानुभूति प्रकृति सौन्दर्य - चित्रण

'आज सोने की संध्या काल
कला लाक्षाभ्रष्ट ज्वलन्त विकराल
पटक रवि को बलि-सा पाताल।'

⑦ विराट कल्पना सौन्दर्य

जिसमें सुन्दर रूप कला है
नव वसन्त जिसका शृंगार
तारे हार, शीत सूर्य राशि,
मेघ केश, —— तुषार।

http://www.upadda.com

⑧ रहस्यभावना में सौन्दर्य

'स्वर्ण ज्योत्स्ना में जब संसार,
चाकित सोता है शिशु-सा नादान।
विश्व की पलकों में सुकुमार,
विचरते हैं जब स्वप्न अजान।।

न जाने नक्षत्रों से कौन,
निमंत्रण देता मुझको मौन।'

⑨ आलंकारिक सौन्दर्य -

'मृदु मन्द-मन्द मन्थर-मन्थर
लघु तरणि हंसिनी-सी सुन्दर,
तिर रही खोल पालों के पर।'

⑩ भाषा - खड़ी ब

(समयाभाव के कारण प्रश्न हो नहीं पाया Please उचित मूल्यांकन कीजियेगा)